Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५५१० - घ

Title हनुमच्चालीसा

Author +

Extent ५ Age +

Subject संपूर्णम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

5510
F. 5

हनुमानचाली

नं० १०१९

142

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

~~नं० ५५~~

नं० ५५१० — च

हनुमच्चालीसा

पत्राणि ५ (पञ्च)

(संपूर्णम्)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं १०१९-क
हनुमानचालीसा
पूर्ण

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीरामाय नमः ॐ
जयहनुमंनज्ञानगुणसागर ॥ जयकपी-
शत्रिलोकउजागर ॥ रामदूतअतुलित
बलधामा ॥ अंजनीपुत्रपवनसुतनामा
महाबलीविक्रमबजरंगी ॥ कुमति
निवारसुमतिकेसंगी ॥ कंचनवरन ॥ ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह १

विराजसदेसा ॥ कुंडलकानकेगहैकेसा

हस्तिवज्रअरुधजाविराजै ॥ कांधेमूंजफ ॥

जनेऊसाजे ॥ शंकरशक्तिकेसरीनंदन

तेजप्रतापमहाजगवंधन ॥ विद्यावेन ॥

निपुटअतिचातुर ॥ भक्तिकारजकरबे

कउंआतुर ॥ रामचरित्रसुनवेकऊरसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

या॥ रामलछमनुसीतामनबसीयास्त
स्वसुरसीयादिखरायो॥ बजेतूपधर
लेकफरायो॥ भीमतूपह्वोइब्रहुरासि
ग्योरे॥ श्रीरामचंद्रकेकाराजसंभारे॥ रघु
पतिकीनबडुबडियाई॥ भरतहिबले
प्यारोभाई॥ सहुहननामसुगणबमराग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह २ ७

2

यो॥श्रीश्रुपनेसुषरामबनायो॥तुमउप
कारसुग्रीँकाकीना॥राममिलायराज
तुमदीना॥तुमरामेत्रविभीषनमाना॥
ऊवालेकपतिसभजगजाना॥लत्वशा
मारायोजनजोभाना॥जन्मतहीसब
जगजाना॥कृदयसोंसुषमेलयोना॥॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हि॥जननिनामकिकुअचरनाही॥उरज
नकाजसगलकेजीते॥सगमअनुग्रह
नमरेतेते॥रामद्वारानमरघवाराविन
अज्ञानेहोयमदिग्रारा॥नमरामभगतरा
मकोपावै॥जन्मजन्मकेदुःखविसाँरा
वै॥समसुखसहैनमारीसरना॥न

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह मरछकका हनेडरना ॥ दैन्यभूतनकिछुति
१ कटनआवै ॥ महावीरजबनामसुनावै
3 नासैरोगहरैसबपीरा ॥ जपैनिरंतरहनु
मंतबीरा ॥ संकटतेहनुमंतछुडावै ॥ म
नवचकर्मजबीकोध्यावै ॥ होरमनोरथ
जोकोध्यावै ॥ अनेकइछिवितनवतफल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पावै॥पैंजगमै अनापनमारा होअसि
ऊजगउजआरा॥अधिकवेनतीकरोन
मपाही॥होरवसीलाराघननाही॥मर
नपरोदयाकरहैरो॥महावीरमैनेरोवा
रो॥पड़ैभजरंगचालीसैकामविसवैबी
म॥रामामोगकायादहै॥भैयमगारनेति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हृ ५

रमैरहे ॥ जोदिनप्रतिरहमैत्रउवरहीमे
गलदिनहूनएजनकरई ॥ आदित्य।
वारआदित्यकीअरचा ॥ धूपदीपवंदन
मेंथवारचा ॥ मिष्टअन्नधरैरहध्यावै ॥ भक्ति
प्रभावहनिस्चैपावै ॥ दिनचालीनितुने
मनिवाहे ॥ एकशतआठवेरअबगाहै ॥ पं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पवमहस्तपंचमउवपूजै ॥ नरपनहवन ॥
होरकरलीजै ॥ पुनपीछेइहमेंत्रजोय।
दै ॥ जोजाहूंसोंमघसेंपारदै ॥ सोसमस ॥
त्यजुमनमैंधराई ॥ उकनामसन्याझकमसव
कराई ॥ इमहिमेंत्रपठरोगनिवारै ॥ छाया।
हछिकाहिसमगारे ॥ कबडूननाकोदरि ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ने. २३४

हनु

इपरई ॥ मंत्रयेत्रअरजोहनजरई ॥ परम
प्रभाववंतनरसोई ॥ जाकेरक्षपवनसु
नहोई ॥ इति श्रीहनुमानचालीसासमासम

८८
१०१९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri